खेल और सीखना | सफलताएँ और चुनौतियाँ

रामकृष्ण भट

हम अक्सर माताओं को यह कहते हुए सुनते हैं कि उनका बच्चा कितना चंचल है। और इस बात की ख़ुशी की चमक उनके चेहरे पर साफ़ नज़र आती है। शिक्षक भी जब अपने प्रिय विद्यार्थियों के बारे में बात करते हैं तो कहते हैं कि वे 'बहुत सक्रिय' हैं। लेकिन क्या हम आमतौर पर बच्चों की चपलता को सक्रिय ढंग से सीखने की विशेषता के रूप में देखते हैं? वास्तविकता तो यह है कि खेल और विभिन्न गतिविधियाँ प्रभावी ढंग से सीखने के आवश्यक साधन हैं। सक्रिय रहना आनन्ददायक है क्योंकि इससे भावों का उद्दीपन होता है। प्रत्येक बच्चा स्वाभाविक रूप से सक्रिय, चंचल और निरन्तर सीखने वाला होता है, जब तक कि उस पर माता-पिता, समाज या स्कूल का वातावरण कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाता।

जब बात कक्षा की हो तो खेल को आनन्दपूर्ण अधिगम के लिए रचा जाता है। लेकिन इस तथ्य के बावजूद कि सक्रिय और गतिविधि आधारित शिक्षण-अधिगम की अवधारणाओं की वकालत लम्बे समय से की जाती रही है, क्या हमें उपर्युक्त समझ के आधार पर बच्चों के लिए बनाई गई सीखने की रूपरेखाएँ मिलती हैं? कक्षा की रणनीति के रूप में इसे आसानी से और व्यापक रूप से प्रयोग में क्यों नहीं लाया जाता, इसके कारणों में जाने से पहले, मैं देश के दो अलग-अलग हिस्सों के शिक्षकों के दो उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिन्होंने अपनी कक्षाओं में सीखने की आनन्दपूर्ण प्रक्रियाओं को सफलतापूर्वक अपनाया।

सफलता की कहानियाँ

जब केरल राज्य अपने स्कूलों में एनसीएफ 2005 के सिद्धान्तों को अपनाने की प्रक्रिया में लगा हुआ था, तब मैंने वहाँ कन्नूर जिले के एक सरकारी उच्च प्राथमिक विद्यालय का दौरा किया था। कक्षा 6 की एक शिक्षिका अपने विद्यार्थियों को गणित के पीरियड में खेल के मैदान में ले गईं। उन्होंने कक्षा को दो समूहों में विभाजित किया — लड़के और लड़कियों के एक समूह को 500 मीटर के ट्रैक पर दौड़ना था और दूसरे समूह को स्टॉपवॉच, पेन और पेपर लेकर पहले समूह के दौड़ने के समय को नोट करना था। प्रत्येक बच्चे को कुछ-न-कुछ करना था।

जब उनको दिए गए कार्य पूरे हो गए (लगभग 10 मिनट में) तो वे कक्षा में लौट आए और अपने-अपने समूहों में ज़मीन पर बैठ गए। शिक्षिका ने आठों धावकों के समय (मिनट और सेकण्ड में) की जानकारी दी और विद्यार्थियों से कहा कि वे डेटा को आरोही और अवरोही क्रम में लिखें, फिर संचित और औसत समय ज्ञात करें। शिक्षिका ने उन्हें स्पष्ट निर्देश दिए। विद्यार्थी बेहद अनुशासित थे और वे निर्देशों का पालन पूरी तत्परता के साथ कर रहे थे, जिससे यह बात स्पष्ट हो रही थी कि वे ऐसी गतिविधियों के आदी थे। सभी कार्यों को 40 मिनट के अधिगम चक्र में पूरा किया गया।

शिक्षिका के पास 'कैसे' पर आधारित कई प्रश्न थे, जैसे दौड़ कैसी रही? समय की गणना कैसी रही? आरोही व अवरोही क्रम और औसत समय आदि की प्रक्रिया को आपने कैसे समझा? इससे वे अपनी भावनाओं, अनुभवों और सीखने पर चिन्तन कर सके। विद्यार्थियों ने सोच-समझकर अपने उत्तर दिए।

केरल के स्कूल की इस शिक्षिका ने इस अभ्यास को सफल बनाने वाली तीन बातों का उल्लेख किया :

क. बच्चों को आनन्दपूर्ण अधिगम के अभ्यास का आदी बनाना

ख. शिक्षिका द्वारा स्पष्ट निर्देश देने के अलावा कार्य को सुचारु रूप से सुगम बनाना और प्रोत्साहन देना

ग. विद्यार्थियों में टीमवर्क की भावना

मुझे लगता है कि यह बात महत्त्वपूर्ण थी कि शिक्षिका ने विद्यार्थियों को बातचीत करने और सीखने पर सोचने के लिए प्रेरित किया। इस तरह विद्यार्थियों ने सोचने की प्रक्रिया का भी आनन्द लिया। यह एक आवश्यक शिक्षण कौशल है जिसने इस उदाहरण में अच्छा काम किया है। पारम्परिक स्कूल प्रणाली में आमतौर पर विद्यार्थियों को बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रतिस्पर्धा में धकेला जाता है, जिससे ऐसी स्थितियों में सीखने की भावना समाप्त हो जाती है। इस उदाहरण में दौड़ के क्रमागत समय ने विद्यार्थियों को आरोही और अवरोही क्रम की कल्पना करने में मदद की। एक के बाद एक विद्यार्थियों की दौड़ ने उन्हें एक अमूर्त अवधारणा को अपनी आँखों से देखने के अवसर दिए।

कर्नाटक के हासन जिले के एक स्कूल में मेरी मुलाक़ात एक और शिक्षिका से हुई जो कक्षा के समय में तीसरी कक्षा के

विद्यार्थियों को एक खेल खिला रही थीं। वे एक-एक करके विद्यार्थियों को बुलातीं और उनकी आँखों पर पट्टी बाँधतीं। पट्टी बाँधे विद्यार्थी को कुछ संकेतों के आधार पर पाँच विद्यार्थियों को पहचानना होता था, जैसे कि उनकी आवाज़ सुनकर। बच्चों ने ख़ूब मस्ती की और वे बेहद उत्साहित थे। शिक्षिका ने कहा कि वे इस खेल के बाद बच्चों को 'सुनने' और 'स्पर्श करने' की इन्द्रियों पर चर्चा करवाएँगी और इस तरह पाठ के भीतर इससे सम्बन्धित विषयवस्तु को पढ़ाएँगी। उन्होंने अपने विद्यार्थियों के लिए होमवर्क और परियोजना कार्य के लिए ऐसी गतिविधियाँ भी तैयार की थीं जो 'देखने' और 'चखने' से सम्बन्धित थीं ताकि बच्चों को स्वयं खोजबीन करने का मौक़ा मिल सके।

कक्षा में खेले गए इस खेल ने बच्चों को उनकी इन्द्रियों सम्बन्धी ठोस अनुभव प्रदान किए। यदि शिक्षिका *क्यों* और *कैसे* प्रश्न पूछकर बच्चों की मदद करें तो बच्चे बिना किसी हिचकिचाहट के अपने अनुभव बताने लगेंगे। खेल और गतिविधियाँ विद्यार्थियों के भाषा विकास का एक पक्का साधन हैं। यहाँ इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है कि बच्चे के विकास के सबसे महत्त्वपूर्ण पहलुओं में से एक है, शरीर और मन के बीच का सामंजस्य। बच्चे की शारीरिक संलग्नताओं के माध्यम से मन विकसित होता है। यदि बच्चों को खेलने न दिया जाए तो वे अपने प्राकृतिक विकास से और भाषा के विकास की बारीकियों को समझने से महरूम हो जाएँगे। शरीर और शरीर के माध्यम से भावनाएँ, भाषा के विकास में बहुत अधिक योगदान देते हैं।

खेल को सीखने के उपकरणों के रूप में रचने में आने वाली बाधाएँ

क्या कारण है कि हम बच्चों की चंचलता को, कक्षाओं और स्कूलों में व्यापक पैमाने पर सीखने की रूपरेखा तैयार करने के साधन के रूप में उपयोग नहीं करते?

शिक्षक-केन्द्रित शिक्षण

शिक्षकगण खेल को कक्षा में या पाठ्यपुस्तक से सीखने के उपकरण के रूप में देखने के पीछे जो औचित्य है, उसे नहीं समझते। अधिकांश शिक्षक खेल गतिविधियों को मनोरंजन के साधन के रूप में देखते हैं। जब सीखने की बात आती है तो वे खेल को ध्यान बँटाने वाली अनुचित चीज़ समझते हैं। यह शिक्षक-केन्द्रित शिक्षण-अधिगम का परिणाम है, जो युगों से चला आ रहा है। आनन्दपूर्ण अधिगम के प्रभाव को समझने और फिर अपने शिक्षण में इसको प्रयोग में लाने के बारे में सोचने के लिए शिक्षकों में इसके बारे में वैचारिक समझ होना ज़रूरी है।

भले ही सीखना स्वाभाविक रूप से होता हो, लेकिन जब सीखने के विशिष्ट परिणामों की बात आती है तो विद्यार्थियों को सोच-विचार की तरफ़ ले जाना आवश्यक है, जिससे वे वांछित परिणाम प्राप्त करते हैं। विद्यार्थियों को इस प्रकार से चिन्तन की ओर अग्रसर करना उपर्युक्त दोनों मामलों में स्पष्ट है। प्रश्न पूछकर बच्चों को स्वयं सोच-विचार करने के लिए प्रेरित करना एक कौशल है और यह सुगमता का उच्च स्तर है। एक बार शिक्षक इसे समझ लें तो फिर इसे हासिल करना आसान है। लेकिन आमतौर पर हम शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों से सांकेतिक प्रश्न पूछते हुए नहीं देखते। उन्हें तैयार उत्तर देने की आदत होती है जो सीधे पाठ्यपुस्तकों से ले लिए जाते हैं।

सामाजिक दृष्टिकोण

स्कूल जाने वाले बच्चों को प्रायः घर में खेलने की आज़ादी नहीं दी जाती। अधिकांश माता-पिता और समाज के अधिकांश हिस्से के लिए तो स्कूल पाठ्यपुस्तकों और उन्हें पढ़ना सीखने के लिए होते हैं। वे बच्चे के विकास की मानसिक प्रक्रियाओं और बच्चों की भाषा और सामाजिकता में खेल के अत्यधिक योगदान के बारे में बहुत कम जानते हैं।

खेल के दौरान बच्चे भावनात्मक रूप सचेत होते हैं और सकारात्मक सुझावों के लिए तैयार रहते हैं। माता-पिता स्कूल जाने वाले बच्चों को घर के काम करने से भी रोकते हैं क्योंकि वे बच्चों के भविष्य को हमारी वर्तमान स्कूल प्रणाली में उनकी सफलता से जोड़ते हैं। यह रवैया बच्चों के प्राकृतिक विकास को रोकता है और उनकी खोजबीन करने की स्वतंत्रता में बाधा डालता है। यही वह बिन्दु है जहाँ पर स्कूल के शिक्षकों को सार्थक सामुदायिक सेवा में संलग्न होने का अवसर मिलता है, अर्थात माता-पिता और समाज को खेल और स्वतंत्रता के महत्त्व के बारे में जागरूक करना।

स्थान की कमी

ऑनलाइन कार्यक्रमों के दौरान मैं बल्लारी (कर्नाटक) में एक *नली कली* शिक्षिका से मिला। मैं बाद में उनकी कक्षा में गया। शिक्षणशास्त्र के रूप में खेल के बारे में हमारी ऑनलाइन चर्चा के बाद वे इसे अपनी कक्षा में लागू करना चाहती थीं। लेकिन वे 70 से अधिक विद्यार्थियों की कक्षा में बच्चों को सम्भालने और उन्हें खेल के माध्यम से सीखने में संलग्न करने को लेकर झिझक रही थीं! चूँकि कक्षा में पर्याप्त जगह नहीं थी, इसलिए वहाँ बच्चों का यहाँ से वहाँ होना एक समस्या थी। उन्हें बाहर खुले में ले जाने की भी सम्भावना नहीं थी क्योंकि परिसर छोटा था और ऐसा करने से अन्य कक्षाओं को परेशानी होती। धान के दो खेतों से घिरे घनी आबादी वाले गाँव में बच्चों के बड़े समूह को बाहर किसी खुली जगह पर ले जाना भी उन्होंने सुरक्षित नहीं समझा। मैं भी उस समय उन्हें कोई रास्ता

नहीं सुझा पाया इसलिए मैंने उनसे कहानी सुनाने, रोल-प्ले या परिस्थितिजन्य बातचीत करवाने आदि के बारे में सोचने का अनुरोध किया।

कई अन्य स्कूलों में यह केवल भौतिक स्थान की कमी का सवाल नहीं है। या तो कक्षाएँ अव्यवस्थित होती हैं या उनमें अनुपयोगी वस्तुएँ भर दी जाती हैं; जहाँ पर्याप्त बड़े मैदान हैं; वहाँ उनका रखरखाव ठीक नहीं है और वे बच्चों के लिए साफ़ या सुरक्षित नहीं हैं। यह पूरी स्थिति गतिविधि-आधारित अधिगम के रास्ते में खुद ही खड़ी की गई बाधा जैसी लगती है। कई स्कूलों में शिक्षकों को बच्चों को खेल के मैदान या स्कूल के बाहर खुली जगहों पर ले जाना जोखिम भरा लगता है। यह एक सांस्कृतिक मुद्दा भी है कि अधिकांश शिक्षक और माता-पिता केवल कक्षा को ही सीखने की सही जगह के रूप में देखते हैं।

विद्यार्थियों में विविधता

सरकारी स्कूल के बच्चों के रवैयों, बर्तावों, पृष्ठभूमियों और अनुभवों से सम्बन्धित विविधता कई शिक्षकों को समस्याजनक लगती है। वे बताते हैं कि बिना बल प्रयोग के विद्यार्थियों को अनुशासित करना कितना चुनौतीपूर्ण है। इसलिए उन्हें खेल के माध्यम से सिखाना शिक्षकों को काफ़ी अवास्तविक लगता है। लेकिन अगर विद्यार्थियों की विविधता को एक संसाधन के रूप में और उनकी प्राकृतिक और विविध गतिविधियों को सीखने की प्रक्रियाओं के रूप में देखा जाए तो स्थितियाँ बदल सकती हैं।

यदि शिक्षक बच्चों की पृष्ठभूमियों, चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों और क्षमताओं का सम्मान करना शुरू कर दें और उन पर आधारित खेलों की सहायता से सीखने की रूपरेखा तैयार करें तो प्रत्येक बच्चे को अपनी गरिमा और आत्मसम्मान का बोध होगा। यही वह बिन्दु है जहाँ से केरल की शिक्षिका ने सफलता प्राप्त करना शुरू कर दिया है, हासन की शिक्षिका को सफलता मिलने वाली थी और बल्लारी की शिक्षिका यही करना चाहती थीं। वे सभी इस बारे में सोच रही हैं कि बच्चों को खोजबीन करने के लिए आवश्यक स्वतंत्रता कैसे प्रदान की जाए।

निष्कर्ष

सच पूछा जाए तो खेल, बच्चों को वास्तविक रूप से सीखने में संलग्न करने का एक स्वाभाविक तरीक़ा है। मैं खेल के ऐसे तीन महत्त्वपूर्ण पहलुओं के साथ अपनी बात समाप्त करूँगा जिन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए :

- सबसे अच्छी बात तो यह होगी कि सीखने को बच्चों के घर या गाँव की प्राकृतिक गतिविधियों, परिस्थितियों और मौजूदा अनुभवों पर रचा जाए और इनके माध्यम से अपेक्षित दक्षताओं और सीखने के परिणामों को पाने के प्रयास किए जाएँ। हालाँकि पाठ्यपुस्तकों में कुछ पूर्व-गतिविधियाँ करवाने और कक्षा में सीखने के दौरान पूर्व-ज्ञान से सह-सम्बन्ध बनाने के सुझाव दिए गए हैं, लेकिन इसके बावजूद इस बारे में अधिकांश शिक्षक समुदाय में जागरूकता का लगभग पूर्णतः अभाव है। जो शिक्षक ऐसा करने का प्रयास करते हैं, वे भी ज़्यादातर इसे पिछली कक्षा की पाठ्यपुस्तक के ज्ञान (याद किए गए और उनके विद्यार्थियों के जीवन के अनुभवों से असम्बद्ध) और कुछ सतही पूर्व-गतिविधि तक ही सीमित रखते हैं।
- खेल को सीखने के ऐसे साधन के रूप में देखा जाना चाहिए जो बच्चों के लिए सहज और स्वाभाविक है। खेल सीखने का एक उपकरण है और इसका उपयोग करने से बच्चे के सीखने की स्वाभाविक इच्छा बिना किसी हिचक के इसे अपना लेगी। लेकिन इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि इसमें जिन खेलों का प्रयोग किया जाए, वे सीखने की विषय-सामग्री, बच्चे की उम्र और उसके रुझान के उपयुक्त हों।
- यह तरीक़ा तब सफल होगा जब शिक्षक प्रतिस्पर्धा को आनन्दपूर्ण अधिगम, टीमवर्क, परस्पर अधिगम और बच्चों के बीच स्वाभाविक सम्बन्धों के लिए एक रुकावट समझें। इसलिए शिक्षकों को प्रतिस्पर्धा की ओर ले जाने वाली स्थितियों या रवैयों से निपुणता से बचना चाहिए। भागीदारी, सोच-विचार और एक-दूसरे से सीखना — खेल में ये भावनाएँ होनी चाहिए। बच्चों के बीच सम्बन्ध तब मज़बूत होंगे जब शिक्षक उनके बीच सीखने के सम्बन्ध स्थापित करेंगे।

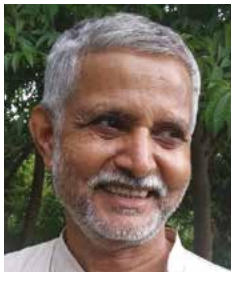

रामकृष्ण भट एक किसान हैं, जो अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के सदस्य के रूप में शिक्षकों के साथ काम करते हुए शैक्षिक विचारों से परिचित हुए। साहित्य पढ़ना, अनुवाद करना और बच्चों को कहानियाँ सुनाना उनके अन्य शौक हैं। उनसे rkbkrishi@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद** : नलिनी रावल